RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper
Available online at: www.rhimrj.co.in

बिहार में किसान आन्दोलन का स्वरूप

डॉ0 मो0 मकसूद आलम

इतिहास विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

ब्रिटिश उपनिवेशवाद के शोषण के खिलाफ उत्पन्न भारतीय राष्ट्रीय राजनीति की विभिन्न अवधारणात्मक धाराओं के प्रति इतिहासकारों ने अपनी लेखनी चलायी हैं। अंग्रेजी सत्ता को किसानों द्वारा उस समय से ही चुनौती दी जा रही थी, जब से अंग्रेजों ने देहातों में अपना प्रभुत्व स्थापित कर उनका आर्थिक एवं सामाजिक और यहाँ तक कि लैंगिक शोषण एवं उत्पीड़न करना आरम्भ किया था। बिहार में किसानों ने अपने ही ढंग से, शिक्षित मध्यमवर्ग की अगुवाई की शुरूआत के पहले ही, अंग्रेजों के प्रति व्रिदोह किया था। अपनी सीमाओं एवं दुर्बलताओं के बावजूद चम्पारण के राज कुमार शुक्ला, शोभराज तथा अन्य के प्रयत्न इस तथ्य को उजागर करते हैं कि किसानों में अंग्रेजों के प्रति विद्रोह करने की भावना को व्यक्त करने की, गाँधी एवं कांग्रेस की पहल के पूर्व ही, उनकी स्वतंत्र चेतना थी, उनका संगठन था और समस्या का नेतृत्व करने की क्षमता भी। अपनी समझदारी के आधार पर ही चम्पारण के इन किसान नेताओं ने कांग्रेसी एवं गाँधी की सहायता लेने की कोशिश की थी ताकि उनकी समस्याओं का हल अपेक्षाकृत बेहतर ढंग से निकाला जा सकें।

1917 में गाँधी चम्पारण आये। उन्होंने किसानों की समस्याओं का अध्ययन किया। अपनी विशेष समझदारी और रणनीति के तहत किसानों की समस्या को सुलझाया, उन्हें राहत दिलायी। लेकिन उन्होंने चम्पारण के किसानों की समस्या को न तो कांग्रेस से जोड़ा और न ही राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन से। तथापि उनके प्रयत्नों से चम्पारण के किसानों में अंग्रेजी साम्राज्यवाद के प्रति भयमुक्तता का जो वातावरण बना उसने चम्पारण के किसानों को अपनी समस्याओं की बेहतर ढंग से पहचाना तथा उनके बेहतर निराकरण के प्रति प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्षरूप से काफी सजग कर दिया। इतना ही नहीं, भावी राष्ट्रीय राजनीति के एक सशक्त तत्त्व के रूप में उनकी पहचान को भी सुनिश्चित कर दिया। इसीलिए तो गाँधी ने 1920 में जोर देकर कहा : ''स्वराज किसानों पर निर्भर करता है।'' अगर किसान स्वराज्य प्राप्ति में सहायता नहीं करते तो उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता और यदि वे सरकार के साथ सहयोग करते हैं तो आपकी तथा व्यापारियों की सारी क्षमताएँ भी स्वराज्य नहीं दिला सकती।''

गाँधी के चम्पारण से चले जाने के पश्चात भी किसानों की समस्याएँ थी। वे अब भी ब्रिटिश उपनिवेशवादी तंत्र के शोषण एवं उत्पीड़न के शिकार हो रहे थे। अपनी स्वतंत्र चेतना तथा गाँधी की सेवाओं से और अधिक सजग हो कर अपनी समस्याओं की तीव्रता को बेहतर ढंग से समझने भी लगे थे। इतना ही नहीं, उनका निराकरण करने हेतु वे किसी भी नेतृत्व के तले संगठित होने को आतुर भी थे। इसी पृष्ठभूमि में स्वामी विद्यानंद का 1919–20 का किसान आन्दोलन तथा कांग्रेस नेतृत्व के अन्दर ही वामपक्षीय लोगों का किसान आन्दोलन काफी चर्चा का विषय तब भी रहा और आज भी इतिहासकारों के लिए चर्चा का विषय है।

स्वामी विद्यानन्द के किसान आन्दोलन को, जो मुख्य तौर पर दरभंगा राज के शोषण के खिलाफ चलाया गया था, बिहार के कांग्रेसी नेतृत्व का समर्थन नहीं प्राप्त हुआ। गाँधी का भी समर्थन वे नहीं प्राप्त कर सके थे।'' कुछेक ने तो चम्पारण में गाँधी के प्रयत्नों से हुए समझौता दस्तावेज पर भी टिप्पणी करते हुए लिखा है कि वह किसान के हित में अत्यन्त ''खतरनाक तत्त्व'' ही साबित हुआ था। उदाहरण के लिए याज्ञिक का विचार था : ''आगे आनेवाले कई सालों के लिए गाँधी ने सरकार एवं मालिकों के लिए चम्पारण को सुरक्षित, शांत और सुविधाजनक बना दिया।'' सुकुल जैसे किसान नेताओं की कीमत पर, कपिल कुमार का कहना है, गाँधी ने कांग्रेस में परम्परागत प्रभावशाली सामाजिक समूहों एवं मुखर भागों को ही बनाए रखना पसन्द किया। इतिहास के पन्नों में गाँधी को किसानों से जोड़नेवाला सुकुल खुद खो गया इतिहास की गहराइयों में।''

1930 के दशक के मध्य में, आर्थिक मंदी तथा सविनय अवज्ञा आन्दोलन द्वारा किसान जागरण की पृष्ठभूमि में, बिहार के किसानों में उल्लेखनीय जागृति पैदा हुई थी। स्वामी सहजानन्द ने लिखा है : ''बात असल में यह थी कि सन् 1930 ई. में जो लहर मुल्क में आई उसके रहते किसानों में अभूतपूर्व जागृति हुई। फलतः उनकी समस्याएँ खामख्वाह ऊपर आ गई, जो अब तक दबी पड़ी थी। जब उन्होंने नेताओं के कहने से त्याग और बलिदान किया तो उन्हें हिम्मत हुई कि नेताओं से भी हम कुछ कहें

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved ISSN: 2349-7637 (Online)

और अपने दुखड़े सुनायें। उदाहरणार्थ गया जिले में और पटना के मसोढ़ा परगने में किसानों ने अपनी समस्याओं को कांग्रेस के समक्ष रखा ताकि उनका जमींदारों द्वारा उत्पीड़न रोका जा सके। कांग्रेस के नेतृत्ववर्ग ने उनकी बातें सुनी, आँसू बहाये, जाँच पड़ताल का आश्वासन दिया, जाँच पड़ताल की भी, पर नतीजा किसानों के पक्ष में न जाकर जमींदारों के पक्ष में गया। फलतः डॉ0 युगल किशोर सिंह, पंडित यदुनंदन शर्मा प्रभृति किसानों नेताओं के प्रभाव से स्वामी सहजानन्द की सहायता लेकर ''असली किसान सभा'' गठित की गयी और किसानों की समस्याओं का निराकरण करने का प्रयास शुरू कर दिया गया। अभी भी स्वामी जी की समझ थी कि ''जमींदारों को समझाकर तथा उनसे मिल–मिलाकर किसानों के कष्ट दूर किये जा सकते थे। इस दिशा में उन्होंने अनेक प्रयत्न भी किये। परन्तु परिणाम निराशाजनक था। फलतः उन्होंने सोचा : ''अब तो कोई दूसरा रास्ता ही सोचना पड़ेगा और दूसरा रास्ता उन्होंने कांग्रेस से अलग होकर किसानों के प्रश्न पर संघर्ष का चुना। उन्हें अब भी गाँधी में आस्था थी कि वे किसानों के प्रश्न पर उनका साथ देंगे। पर 1934 के भूकंप के बाद जमींदारों के उत्पीड़न से खासकर दरभंगा महाराज के द्वारा किसानों के शोषण से, किसानों को ऋण दिलाने के लिए अब उन्होंने विशेष कार्यक्रम की योजना बनाई और गाँधी ने जब इसका अनुमोदन नहीं किया तो वे गाँधी के मोहपाश से मुक्त हुए, ''उग्रपंथी'' बने। उन्होंने ''सबसे बड़ा धर्म'' सबसे बड़ी अहिंसा और ''सबसे बड़ा सत्य'', उन्हीं गरीब किसानों की सेवा समझा जो अन्न उत्पादक तो थे पर अन्न के अभाव में दम तोड़ने की परिस्थिति के शिकार थे, जमींदारों के हाथों। चूँकि कांग्रेस संगठन में जमींदार तत्त्वों एवं धनी किसानों का प्राबल्य था, वे किसानों के हित के प्रति उतनी ही दूर तक जाने को तैयार थे जितनी दूर तक जमींदार के हित सुरक्षित रह सकते थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. सहजानन्द सरस्वती, किसान कैसे लड़ते हैं, पटना।
2. सेन, सुनील, एग्रेरियन स्ट्रगल इन बंगाल, नई दिल्ली, 1972।
3. कौशल किशोर शर्मा, एग्रेरियन मूवमेंट एण्ड कांग्रेस पॉलिटिकल इन बिहार, पृ. 81।
4. एल. पी. सिन्हा, दि लेफ्ट विंग इन इण्डिया, पृ. 388।
5. के. के. दत्त, हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मुवमेंट इन बिहार।
6. जनकधारी प्रसाद, कुछ अपनी कुछ देश की, पृ. 155।
7. आर. सी. मजुमदार, हिस्ट्री ऑफ दि फ्रीडम मुवमेंट इन इण्डियन जिलद 31, पृ. 671।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)